कार्यकारी अध्यक्ष का प्रारम्भिक सम्बोधन

माननीय सदस्यगण, मैं अपने दिल की गहराईयों के साथ उन माननीय सदस्यो का जो चतुर्दश बिहार विधान सभा के सदस्य निर्वाचित होकर इस सदन के माननीय सदस्य हुए हैं मैं उनका अभिनंदन करता हूँ । माननीय सदस्यगण, विधान सभा ईश्वर की इबादत है, खुदा की इबादत है । यह उस खुदा की इबादत है जो मन्दिरों में नहीं रहता या मस्जिदों मे नहीं रहता या गिरजाघरों में नहीं रहता, वह लाखों, करोड़ों झोपड़ियो मे अपनी जिन्दगी की विवशता को लिए हुए, गम और आंसुओं को पालते हुए, जीवन के संघर्ष में रात-दिन अंधेरे में, उजाले में, एकान्त में, समूह में जीवन यापन करता है । संसदीय जनतंत्र में वे हमारे ईश्वर हैं, जनता जनार्दन हैं और जब सत्ता मदांध होती है, जब सत्ता में जड़ता आती है, अवतार हुआ करता है और उस मदांधता को जनता अपनी सार्वभौमिकता का प्रदर्शन करते हुए उसे समाप्त करने की दिशा में आगे बढ़ती है । जब मैं इस आसन पर हूँ, मुझे याद आ रहे हैं स्वर्गीय जन नायक कर्पूरी ठाकुर जी जिन्होंने संसदीय जनतंत्र के इतिहास में नावाद शतक पारी खेली और जिन्हें आजीवन एक विकेट भी जिनका नहीं गिरा । आज उस समाज में, जिस समाज में उनकी कोई जात नहीं थी, जमात थी और वो अनवरत साधना के पुत्र होते हुए समाज के साधक के रुप में, जन नायक के रुप में, नक्षत्र के रुप में चमकते रहे । ऐसे समय में हमें वे याद भी होते हैं । ७४ वर्ष का वह बूढ़ा आदमी लाठी टेकता हुआ बेलीवेट के सड़कों पर जा रहा था, मदान्ध सत्ता की लाठियां उसे लगी थी, वो गिर पड़ा था और उसी के गर्भ से जो सम्पूर्ण क्रान्ति हुई उसी एक सम्पूर्ण क्रान्ति से अभिशक्त होकर बहुत सारे नयी पीढ़ी का नेतृत्व बिहार के जनजीवन में उपस्थित हुआ । सबने अपनी नीयति के अनुसार, अपनी योग्यता के अनुसार, अपनी अपेक्षा के अनुसार, सबने बिहार के विकास में अपने स्तर से जिनका योगदान हुआ है । राजनीति शरीर का धर्म है और धर्म आत्मा की राजनीति है पर जब आत्मा शरीर के धर्म के साथ मिलती है तो राजनीति माँ बनती है और जब राजनीति माँ बनती हैं तो पीढ़िया देवतत्व बनने लगती है । मनुष्यत्व से देवतत्व की ओर अग्रसर होने लगती है और समाज में दूध की नदियाँ बहती हैं। शान्ति की गंगा प्रवाहित होती है और इन्सान शांति के गह्वर में खो जाया करता है । पर जब शरीर से आत्मा की राजनीति अलग होने लगती है तो राजनीति माँ नहीं रहती, राजनीति शरीर बन जाती है और जब शरीर बन जाती है तो राजनीति में जड़ता आती है, राजनीति में मदान्धता आती है । समाज में समाज पोखर बनने लगता है उसमें आतंकवाद, उग्रवाद के कीड़े पलने लगते हैं और बिहार जो भारत की सांस्कृतिक आत्मा है, बिहार जो भारत की सांस्कृतिक आत्मा ही नहीं राजनीतिक आत्मा है, वह भारत की भौगोलिक सीमा भी रही है, वह भारत का इतिहास भी रहा है पर वर्तमान में उस इतिहास को, उस गौरवपूर्ण विगत को भविष्य की ओर ले जाने के लिए कठिन संघर्ष की आवश्यकता पड़ेगी । खुशी इस बात की है कि वर्तमान बिहार का सम्पूर्ण नेतृत्व है इस राज्य का ,वे सभी सम्पूर्ण क्रान्ति के गर्भ से आए हैं चाहे वे पक्ष के हों चाहे वे विपक्ष के हों सभी का एक ही लोक नायक था । बूढ़ा आदमी लाठियाँ टेकता हुआ चलता था । सभी उसी से अनुप्राणित थे, सभी पक्ष और विपक्ष उन्हीं से अनुप्राणित रहा है । मैं सम्पूर्ण सदन को जो सम्पूर्ण क्रान्ति की छाया ,सम्पूर्ण क्रान्ति की आत्मा के रुप में उपस्थित हैं । मैं एक बार फिर आपका अभिनंदन करता हूँ, आपका स्वागत करता हूँ, आपका खैर मकदम करता हूँ ।